eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

हथियारों की दौड़ और वैश्विक स्थायित्व

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
1सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 15 May 2025 Accepted & Reviewed: 25 May 2025, Published: 31 May 2025

Abstract

यह शोध पत्र हथियारों की दौड़ और वैश्विक स्थायित्व के बीच गहरे और जटिल संबंधों का विश्लेषण करता है। 20वीं शताब्दी की शुरुआत से लेकर वर्तमान तक, हथियारों की होड़ ने वैश्विक राजनीति और सुरक्षा को निर्णायक रूप से प्रभावित किया है। इस अध्ययन में परमाणु हथियारों, हाइपरसोनिक मिसाइलों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित स्वायत्त हथियार प्रणालियों, साइबर युद्ध, और अंतरिक्ष सैन्यीकरण जैसे आधुनिक आयामों को समाहित किया गया है। शोध में यह विश्लेषण किया गया है कि इन तकनीकों के तेजी से विकास ने अंतरराष्ट्रीय शांति और स्थायित्व के लिए क्या खतरे उत्पन्न किए हैं। साथ ही, इसमें वैश्विक हथियार नियंत्रण संधियों और बहुपक्षीय कूटनीतिक प्रयासों की प्रभावशीलता का आकलन किया गया है। यह अध्ययन विभिन्न क्षेत्रों में जैसे भारत–पाकिस्तान, चीन–एशिया प्रशांत, और रूस–यूक्रेन संघर्ष दृ हथियारों की दौड़ के क्षेत्रीय प्रभाव का भी मूल्यांकन करता है। शोध पत्र का निष्कर्ष यह सुझाता है कि वैश्विक स्थायित्व के लिए संतुलित हथियार नियंत्रण नीति, तकनीकी विकास में नैतिकता और पारदर्शिता, और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द– हथियारों की दौड़, वैश्विक स्थायित्व, परमाणु हथियार, हाइपरसोनिक मिसाइलें, स्वायत्त हथियार प्रणालियाँ, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर युद्ध, अंतरिक्ष सैन्यीकरण, अंतरराष्ट्रीय हथियार नियंत्रण संधियाँ, रणनीतिक स्थिरता, वैश्विक राजनीति, क्षेत्रीय सुरक्षा, अंतरराष्ट्रीय शांति और सहयोग

Introduction

हथियारों की दौड़ और वैश्विक स्थायित्व का परस्पर संबंध इतिहास में उतना ही पुराना है जितना कि युद्ध और राजनीति की अवधारणा। हथियारों की दौड़ से तात्पर्य उन प्रयासों से है जिनमें एक देश या समूह अपनी सुरक्षा और सैन्य शक्ति को बढ़ाने के लिए नवीनतम और उन्नत हथियार प्रणालियाँ विकसित करता है। यह प्रवृत्ति अन्य देशों को भी हथियारों के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा के लिए प्रेरित करती है, जिससे हथियारों की एक अंतहीन होड़ उत्पन्न होती है। शीत युद्ध के दौरान अमेरिका और सोवियत संघ के बीच परमाणु हथियारों की दौड़ इसका एक प्रमुख उदाहरण है, जिसने वैश्विक शांति और स्थायित्व के सामने गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न कीं। 21वीं सदी में यह दौड़ और भी जटिल और बहुआयामी हो गई है। अब यह केवल परमाणु हथियारों तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसमें हाइपरसोनिक मिसाइलें, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित स्वायत्त हथियार प्रणालियाँ, साइबर युद्ध और अंतरिक्ष सैन्यीकरण जैसे नए आयाम जुड़ गए हैं। इन हथियार प्रणालियों के तेजी से विकास और वैश्विक स्तर पर तकनीकी असंतुलन ने न केवल बड़े देशों के बीच बल्कि क्षेत्रीय शक्तियों के बीच भी अस्थिरता को बढ़ाया है। वैश्विक स्थायित्व एक ऐसी स्थिति है जिसमें विभिन्न देशों और क्षेत्रों में राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा संबंधी संतुलन कायम रहता है। यह स्थायित्व केवल हथियार नियंत्रण या शक्ति संतुलन पर निर्भर नहीं करता, बल्कि इसमें कूटनीतिक समझौते, विश्वास निर्माण उपाय, और तकनीकी विकास में नैतिकता और पारदर्शिता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

हथियारों की दौड़, यदि बिना नियंत्रण और संतुलन के जारी रही, तो यह वैश्विक स्थायित्व को गंभीर खतरे में डाल सकती है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य हथियारों की दौड़ और वैश्विक स्थायित्व के इस परस्पर जटिल संबंध का विस्तृत विश्लेषण करना है। इसमें ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से लेकर आधुनिक तकनीकों तक का विश्लेषण किया जाएगा, साथ ही क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर इसके प्रभाव का मूल्यांकन किया जाएगा। इसके अलावा, यह शोध पत्र अंतरराष्ट्रीय प्रयासों, जैसे हथियार नियंत्रण संधियाँ और कूटनीतिक प्रयासों, की समीक्षा करेगा और वैश्विक स्थायित्व को सुनिश्चित करने के लिए संभावित उपाय सुझाएगा।

परिकल्पना (Hypothesis)–

परिकल्पना 1– हथियारों की दौड़ वैश्विक और क्षेत्रीय स्थायित्व को कमजोर करती है।

परिकल्पना 2– पारंपरिक और आधुनिक हथियार प्रणालियों में वृद्धि से युद्ध के संभावित खतरे बढ़ते हैं।

परिकल्पना 3– अंतरराष्ट्रीय हथियार नियंत्रण संधियाँ हथियारों की दौड़ को नियंत्रित करने में सीमित प्रभावी रही हैं।

परिकल्पना 4– क्षेत्रीय अस्थिरताएँ वैश्विक स्थायित्व को गंभीर रूप से प्रभावित करती हैं।

परिकल्पना 5– बहुपक्षीय कूटनीतिक प्रयास और विश्वास निर्माण उपाय हथियारों की दौड़ को कम करने में सहायक हैं।

शोध प्राविधि (Research Methodology)–

शोध का प्रकार– यह शोध प्रायोगिक (empirical) एवं वर्णनात्मक (descriptive) दोनों है।

डेटा स्रोत– प्राथमिक डेटा के स्थान पर द्वितीयक स्रोतों का व्यापक उपयोग किया गया है, जिनमें शैक्षणिक पुस्तकें, सरकारी रिपोर्ट, अंतरराष्ट्रीय संगठन जैसे संयुक्त राष्ट्र और IAEA के प्रकाशन, शोध पत्र, एवं समाचार पत्र शामिल हैं।

विश्लेषण पद्धति– तुलनात्मक और ऐतिहासिक विश्लेषण के माध्यम से विभिन्न हथियार नियंत्रण संधियों, क्षेत्रीय घटनाओं, और वैश्विक स्थायित्व के परिप्रेक्ष्य को समझा गया।

प्रमुख उपकरण– साहित्य समीक्षा, केस स्टडीज, सांख्यिकीय आँकड़े, और नीति विश्लेषण।

सीमाएँ– प्राथमिक डेटा संग्रह न होने के कारण वास्तविक समय के कुछ पहलुओं का सीधा अवलोकन संभव नहीं था। साथ ही, राजनीतिक संवेदनशीलता के कारण कुछ डेटा सीमित या विवादास्पद भी हो सकते हैं।

पारंपरिक हथियारों की दौड़ और उसका प्रभाव– हथियारों की दौड़ का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि मानव सभ्यता और युद्ध का इतिहास। प्राचीन काल में भी विभिन्न सभ्यताओं ने युद्ध में श्रेष्ठता हासिल करने के लिए नए और घातक हथियारों का विकास किया। किन्तु आधुनिक युग में हथियारों की दौड़ ने एक अभूतपूर्व स्वरूप धारण कर लिया है, जिसमें तकनीकी नवाचार, औद्योगिक उत्पादन, और वैज्ञानिक अनुसंधान ने अभूतपूर्व गति दी है। 20वीं शताब्दी में हथियारों की दौड़ विशेष रूप से शीत युद्ध के दौरान चरम पर पहुँची। इस समय अमेरिका और सोवियत संघ (अब रूस) ने परमाणु हथियारों और लंबी दूरी की

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

मिसाइल तकनीकों का विकास किया। 1945 में द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद परमाणु बम के उपयोग ने वैश्विक रणनीतिक परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया। अमेरिका द्वारा हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम गिराए जाने के बाद सोवियत संघ ने भी 1949 में अपना पहला परमाणु परीक्षण कर इस दौड़ में प्रवेश किया।

इस समय म्यूचुअल एश्योर्ड डिस्ट्रक्शन (MAD) का सिद्धांत विकसित हुआ, जिसमें माना गया कि यदि दोनों पक्ष परमाणु हथियारों से लैस हैं, तो कोई भी पक्ष पहले हमला करने का जोखिम नहीं उठाएगा, क्योंकि यह दोनों के विनाश का कारण बनेगा। इसने एक प्रकार की अस्थायी और तनावपूर्ण स्थिरता बनाई। शीत युद्ध के दौरान कई महत्वपूर्ण हथियार नियंत्रण संधियाँ की गईं, जैसे–

1. आंशिक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (1963)– परमाणु हथियारों के परीक्षण पर नियंत्रण।
2. परमाणु अप्रसार संधि (NPT 1968) – परमाणु हथियारों का प्रसार रोकने का प्रयास।
3. स्ट्रेटेजिक आर्म्स लिमिटेशन ट्रीटी (SALT I और II) – अमेरिका और सोवियत संघ के बीच परमाणु हथियारों की संख्या पर सीमा।
4. इंटरमीडिएट–रेंज न्यूक्लियर फोर्सेज संधि (INF-1987) – मध्यम दूरी की मिसाइलों पर प्रतिबंध।
5. इन संधियों का उद्देश्य हथियारों की दौड़ को नियंत्रित कर वैश्विक स्थायित्व को सुनिश्चित करना था। हालांकि, राजनीतिक अविश्वास और तकनीकी विकास ने इन संधियों की सीमाएँ उजागर कर दीं।

परमाणु हथियारों के अलावा, पारंपरिक हथियार प्रणालियों जैसे टैंक, फाइटर जेट, युद्धपोत, और उन्नत आर्टिलरी ने भी हथियारों की दौड़ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनमें से कई हथियार प्रणालियाँ पारंपरिक युद्धक्षेत्र में निर्णायक भूमिका निभाती रही हैं। भारत–पाकिस्तान, कोरिया प्रायद्वीप, और पश्चिम एशिया जैसे क्षेत्रों में पारंपरिक हथियारों की दौड़ ने क्षेत्रीय अस्थिरता को बढ़ाया है। पारंपरिक हथियारों की दौड़ का वैश्विक प्रभाव में शामिल हैं– जैसे आर्थिक दबाव यानी सैन्य बजट में भारी वृद्धि से सामाजिक और विकास कार्यों पर खर्च में कटौती। राजनीतिक तनाव अर्थात हथियारों की प्रतिस्पर्धा से देशों के बीच अविश्वास और संघर्ष की आशंका। वैश्विक असंतुलन अर्थात सैन्य शक्ति में असंतुलन से कमजोर देशों पर दबाव। प्रसार और आतंकवाद अर्थात पारंपरिक हथियारों का गैर–राज्य तत्वों के हाथों में पहुँचना।

पारंपरिक हथियारों की दौड़ ने वैश्विक स्थायित्व को सीधे चुनौती दी है। यद्यपि हथियार नियंत्रण संधियों और कूटनीतिक प्रयासों ने कुछ हद तक हथियारों की संख्या को सीमित किया, फिर भी तकनीकी नवाचार और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा ने इस दौड़ को जारी रखा। यह अध्याय दर्शाता है कि पारंपरिक हथियारों की दौड़ ने वैश्विक स्थायित्व को कमजोर किया और आगे के अध्यायों में आधुनिक हथियार प्रणालियों और उनके प्रभाव की चर्चा होगी।

आधुनिक हथियार प्रणालियाँ और वैश्विक स्थायित्व– 21वीं सदी में हथियारों की दौड़ ने पारंपरिक युद्धक क्षमता से कहीं आगे का स्वरूप ग्रहण कर लिया है। आज यह दौड़ अत्याधुनिक तकनीकों और नयी अवधारणाओं पर आधारित है, जिनमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता, हाइपरसोनिक हथियार, साइबर युद्ध, अंतरिक्ष सैन्यीकरण, और जैविक एवं रासायनिक हथियारों की भूमिका प्रमुख है। इन आधुनिक हथियार प्रणालियों ने वैश्विक स्थायित्व को और अधिक चुनौतीपूर्ण बना दिया है। हाइपरसोनिक हथियार वे हैं जो ध्वनि की गति से कई गुना अधिक गति से लक्ष्य को भेद सकते हैं। ये पारंपरिक मिसाइल रक्षा प्रणालियों को अप्रभावी

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

बना सकते हैं, जिससे शक्ति संतुलन पर गहरा असर पड़ता है। अमेरिका, रूस, और चीन इस तकनीक में अग्रणी हैं और इनके विकास ने वैश्विक सैन्य प्रतिस्पर्धा को और तेज कर दिया है। हाइपरसोनिक हथियारों की अनिश्चितता और उनकी त्वरित मारक क्षमता से रणनीतिक स्थायित्व को खतरा उत्पन्न होता है क्योंकि शत्रु पक्ष को समय पर प्रतिक्रिया का अवसर नहीं मिलता, जिससे आकस्मिक संघर्ष की संभावना बढ़ जाती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और स्वायत्त हथियार और रोबोटिक्स पर आधारित हथियार प्रणालियाँ युद्ध की प्रकृति को ही बदल रही हैं। ड्रोन, स्वायत्त टैंक और अन्य स्वचालित प्रणालियाँ बिना मानव हस्तक्षेप के निर्णय लेने में सक्षम हैं। इससे नैतिक और कानूनी प्रश्न खड़े होते हैं यदि स्वायत्त प्रणालियाँ गलती से निर्दोष नागरिकों को निशाना बनाएँ तो जिम्मेदारी किसकी होगी?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रणालियों का सैन्य इस्तेमाल वैश्विक स्थायित्व को अस्थिर कर सकता है क्योंकि इन प्रणालियों की क्षमता और प्रतिक्रिया समय परिपूर्ण नहीं है। साथ ही, इनके कारण वैश्विक हथियारों की दौड़ में तकनीकी असंतुलन और अविश्वास की भावना बढ़ सकती है। साइबर हमले अब किसी देश की रक्षा प्रणाली, वित्तीय ढाँचे और महत्वपूर्ण अवसंरचनाओं को अपंग करने में सक्षम हैं। उदाहरण के लिए, स्टक्सनेट वायरस ने ईरान के परमाणु कार्यक्रम को प्रभावित किया। साइबर युद्ध की यह प्रवृत्ति परंपरागत युद्धक्षेत्र से परे जाकर वैश्विक स्थायित्व को चुनौती देती है। साइबर हथियारों की पहचान और रोकथाम कठिन है क्योंकि ये अदृश्य होते हैं और उनका स्रोत प्रमाणित करना भी जटिल होता है। इससे वैश्विक अविश्वास और तनाव बढ़ता है।

अंतरिक्ष में सैन्यीकरण की प्रक्रिया तेजी से बढ़ रही है। उपग्रहों के विरुद्ध हथियार प्रणालियाँ, जैसे ASAT (Anti-Satellite Weapons), का विकास अंतरिक्ष को भी युद्धक्षेत्र में बदल रहा है। अमेरिका, रूस, चीन और भारत ने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। अंतरिक्ष हथियार वैश्विक संचार, नेविगेशन और निगरानी प्रणालियों को बाधित कर सकते हैं, जिससे वैश्विक स्थायित्व को गहरा संकट उत्पन्न हो सकता है। यद्यपि अंतरराष्ट्रीय संधियाँ जैविक और रासायनिक हथियारों के विकास और प्रयोग पर प्रतिबंध लगाती हैं, परन्तु इनके अनुसंधान और संभावित उपयोग की आशंका बनी रहती है। COVID–19 महामारी के दौरान जैविक हथियारों के खतरों की चर्चा ने वैश्विक समुदाय को इन खतरों के प्रति और अधिक सतर्क किया है। ऐसे हथियार वैश्विक स्थायित्व को गंभीर रूप से अस्थिर कर सकते हैं।

आधुनिक हथियार प्रणालियों ने वैश्विक स्थायित्व को अभूतपूर्व चुनौतियों के सामने ला खड़ा किया है। पारंपरिक हथियारों की तुलना में ये प्रणालियाँ कहीं अधिक विनाशकारी, जटिल और अनिश्चित हैं। इन प्रणालियों का विकास न केवल सैन्य प्रतिस्पर्धा को बढ़ाता है, बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन और कूटनीतिक प्रयासों को भी कमजोर करता है। यदि अंतरराष्ट्रीय समुदाय समय रहते इन प्रणालियों के विकास और उपयोग पर नियंत्रण नहीं करता, तो वैश्विक स्थायित्व पर गंभीर खतरा मंडरा सकता है।

क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य और वैश्विक स्थायित्व पर हथियारों की दौड़ का प्रभाव– हथियारों की दौड़ केवल वैश्विक स्तर पर ही नहीं, बल्कि क्षेत्रीय स्तर पर भी स्थायित्व और शांति के लिए गम्भीर चुनौती प्रस्तुत करती है। कई बार क्षेत्रीय संघर्ष और प्रतिस्पर्धाएँ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रभाव डालती हैं, जिससे वैश्विक स्थायित्व संकट में पड़ जाता है। इस अध्याय में हम प्रमुख क्षेत्रों में हथियारों की दौड़ के प्रभाव का विश्लेषण करेंगे और देखेंगे कि किस प्रकार क्षेत्रीय अस्थिरताएँ वैश्विक स्थायित्व को प्रभावित करती हैं। दक्षिण एशिया में भारत और पाकिस्तान के बीच लंबे समय से हथियारों की दौड़ चल रही है। 1947 में दोनों देशों के स्वतंत्रता

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

के बाद से क्षेत्रीय विवाद, विशेषकर कश्मीर को लेकर, इस क्षेत्र को अस्थिर बनाए हुए हैं। भारत और पाकिस्तान दोनों ने परमाणु हथियारों का विकास किया है, जिससे क्षेत्रीय और वैश्विक दोनों स्तरों पर तनाव बढ़ा है। पारंपरिक हथियारों के साथ–साथ दोनों देशों की परमाणु क्षमताओं ने दक्षिण एशिया में एक संतुलन बनाए रखा है, जिसे परस्पर सुनिश्चित विनाश (Mutually Assured Destruction) कहा जाता है। हालांकि, इस संतुलन के बावजूद, क्षेत्रीय तनाव कभी भी पूर्ण संघर्ष में बदल सकता है, जिससे वैश्विक स्थायित्व को खतरा उत्पन्न होता है।

मध्य पूर्व में अरब–इजरायल संघर्ष, ईरान के परमाणु कार्यक्रम, और सऊदी अरब तथा ईरान के बीच प्रतिस्पर्धा ने इस क्षेत्र को हथियारों की दौड़ का केंद्र बना दिया है। ईरान का परमाणु विकास क्षेत्रीय शक्तियों के लिए चिंता का विषय है और इसके परिणामस्वरूप सऊदी अरब और अन्य देशों ने भी अपनी सैन्य क्षमताओं को बढ़ाना शुरू कर दिया है। इस क्षेत्र में हथियारों की दौड़ के कारण स्थिरता बहुत ही नाजुक हो गई है, जिससे न केवल क्षेत्रीय बल्कि वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा और राजनीति पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है।

चीन और अमेरिका के बीच सैन्य प्रतिस्पर्धा, विशेषकर दक्षिण चीन सागर और ताइवान क्षेत्र को लेकर, इस क्षेत्र में तनाव को बढ़ावा दे रही है। चीन का सैन्य आधुनिकीकरण, हाइपरसोनिक हथियारों का विकास, और क्षेत्रीय विवाद इस दौड़ को तीव्र कर रहे हैं।

ताइवान की सुरक्षा को लेकर अमेरिका और चीन के बीच तनाव, साथ ही जापान, दक्षिण कोरिया, और अन्य देशों की सैन्य तैयारियाँ, इस क्षेत्र को एक संभावित संघर्ष क्षेत्र बना रही हैं, जिसका वैश्विक स्थायित्व पर बड़ा असर हो सकता है।

नाटो और रूस के बीच तनाव, यूक्रेन संघर्ष, और पूर्वी यूरोप में सैन्य गतिविधियों की वृद्धि ने यूरोप में सुरक्षा स्थिति को अस्थिर किया है। रूस का सैन्य विस्तार और नाटो का विस्तार इस क्षेत्र में हथियारों की दौड़ को बढ़ावा दे रहा है। यूरोप में इस तनाव का प्रभाव न केवल क्षेत्रीय शांति पर पड़ा है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर परमाणु हथियारों के नियंत्रण और राजनीतिक स्थिरता को भी प्रभावित करता है।

अफ्रीका में हथियारों की दौड़ का स्वरूप अलग है। यहाँ हथियार अधिकतर गैर–राज्य तत्वों, विद्रोही समूहों, और स्थानीय शक्तियों के बीच संघर्ष के लिए हैं। अफ्रीका में सस्ते हथियारों का प्रसार, अस्थिर सरकारों और सीमांत सुरक्षा बलों ने क्षेत्रीय अस्थिरता को बढ़ावा दिया है। यह स्थिति स्थानीय स्तर पर हिंसा और राजनीतिक अस्थिरता को जन्म देती है, जिसका प्रभाव कई बार वैश्विक शरणार्थी संकट और आतंकवाद के रूप में भी सामने आता है।

क्षेत्रीय हथियारों की दौड़ का वैश्विक स्थायित्व पर प्रभाव गहरा और जटिल है। यह केवल स्थानीय संघर्षों और विवादों को बढ़ावा नहीं देती, बल्कि बड़े राज्यों के बीच तनाव को भी बढ़ावा देती है। क्षेत्रीय अस्थिरता वैश्विक आर्थिक, राजनीतिक, और सुरक्षा ढाँचों को प्रभावित कर सकती है। विभिन्न क्षेत्रीय संघर्ष वैश्विक सैन्य गठबंधनों को सक्रिय करते हैं, परमाणु हथियार नियंत्रण प्रयासों को कमजोर करते हैं, और आतंकवाद तथा विस्थापन को बढ़ावा देते हैं। इसलिए, क्षेत्रीय हथियारों की दौड़ को नियंत्रित करना वैश्विक स्थायित्व के लिए आवश्यक है।

क्षेत्रीय हथियारों की दौड़ वैश्विक स्थायित्व के लिए गंभीर चुनौती है। विभिन्न क्षेत्रों में इसके विभिन्न स्वरूप हैं, परन्तु इसके परिणाम व्यापक और वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण हैं। इस अध्याय ने स्पष्ट किया कि

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा और हथियारों की दौड़ को कूटनीतिक प्रयासों, विश्वास निर्माण उपायों, और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से नियंत्रित करना आवश्यक है ताकि वैश्विक स्थायित्व सुरक्षित रह सके।

अंतरराष्ट्रीय प्रयास और चुनौतियाँ– हथियारों की दौड़ को नियंत्रित करने और वैश्विक स्थायित्व बनाए रखने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई प्रयास किए गए हैं। ये प्रयास मुख्यतः हथियार नियंत्रण, निरस्त्रीकरण, और विश्वास निर्माण के क्षेत्रों में केंद्रित रहे हैं। हालांकि, कई चुनौतियों के कारण इन प्रयासों की सफलता सीमित रही है। प्रमुख अंतरराष्ट्रीय हथियार नियंत्रण और निरस्त्रीकरण संधियाँ निम्न हैं–

परमाणु अप्रसार संधि (NPT)– 1968 में स्थापित यह संधि वैश्विक हथियार नियंत्रण का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। इसका उद्देश्य परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकना, परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देना, और परमाणु निरस्त्रीकरण की दिशा में कदम उठाना है। NPT के तीन स्तंभ हैं– निरस्त्रीकरण, अप्रसार रोकथाम, और परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग का अधिकार। हालांकि संधि ने कई देशों को परमाणु हथियार विकसित करने से रोका, किन्तु भारत, पाकिस्तान और उत्तर कोरिया ने इसे स्वीकार नहीं किया या इससे बाहर निकल गए। इससे अप्रसार का वैश्विक प्रयास बाधित हुआ।

व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (CTBT)– यह संधि सभी प्रकार के परमाणु हथियार परीक्षणों पर रोक लगाती है। इसे 1996 में खोला गया, लेकिन कई प्रमुख परमाणु राष्ट्रों ने इसे अभी तक प्रभावी नहीं किया है, जिससे इसका क्रियान्वयन अधूरा है।

कास्पर संधि (INF Treaty)– 1987 में अमेरिका और सोवियत संघ के बीच हुई इस संधि ने मध्यम दूरी की मिसाइलों को प्रतिबंधित किया। लेकिन 2019 में अमेरिका और रूस दोनों ने इसे समाप्त कर दिया, जिससे हथियारों की दौड़ पुनः तीव्र हुई।

मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण संधि (MTCR)– यह संधि मिसाइल तकनीक के प्रसार को रोकने का प्रयास करती है, ताकि हथियारों की दौड़ को रोका जा सके। इसमें अधिकांश प्रमुख देशों ने भाग लिया है, लेकिन इसकी प्रभावशीलता सीमित है।

संयुक्त राष्ट्र का भूमिका– संयुक्त राष्ट्र ने वैश्विक शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए हथियार नियंत्रण के क्षेत्र में कई पहल की हैं। सुरक्षा परिषद के माध्यम से संघर्षों को रोकने और हथियार नियंत्रण संधियों के पालन पर नजर रखने का काम करती है। साथ ही, अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी द्वारा परमाणु संयंत्रों की निगरानी और निरीक्षण की जाती है, ताकि परमाणु हथियारों के प्रसार को रोका जा सके। अंतरराष्ट्रीय समुदाय में विभिन्न देशों के राजनीतिक और सामरिक हितों का टकराव हथियार नियंत्रण प्रयासों की सबसे बड़ी बाधा है। देश अपनी सुरक्षा चिंताओं के कारण हथियारों को विकसित या बनाए रखते हैं, जिससे समझौतों को लागू करना कठिन होता है। तकनीकी प्रगति के कारण हथियार प्रणालियाँ तेजी से विकसित हो रही हैं, जिनका नियंत्रण करना जटिल हो गया है। उदाहरण के लिए, साइबर हथियार और स्वायत्त प्रणाली नियंत्रण के पारंपरिक ढाँचों से बाहर हैं। देशों के बीच अविश्वास और पारदर्शिता की कमी के कारण हथियार नियंत्रण संधियाँ प्रभावी रूप से लागू नहीं हो पातीं। गुप्त हथियार विकास और परीक्षण संधि उल्लंघनों को बढ़ावा देते हैं। आधुनिक युद्ध में गैर–राज्य तत्वों जैसे आतंकवादी समूहों द्वारा हथियारों का उपयोग भी वैश्विक स्थायित्व के लिए गंभीर खतरा है। इन समूहों को हथियारों की उपलब्धता नियंत्रण प्रयासों को चुनौती देती है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

अंतरराष्ट्रीय प्रयासों ने हथियारों की दौड़ को नियंत्रित करने में कुछ सफलता प्राप्त की है, परंतु विभिन्न राजनीतिक, तकनीकी, और सामाजिक चुनौतियों के कारण वैश्विक स्थायित्व अभी भी जोखिम में है। इसलिए, अंतरराष्ट्रीय समुदाय को अधिक समन्वित, पारदर्शी, और प्रतिबद्ध होकर इन चुनौतियों से निपटना होगा ताकि स्थायी शांति और सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

निष्कर्ष – हथियारों की दौड़ और वैश्विक स्थायित्व के बीच गहरा और जटिल सम्बन्ध है। ऐतिहासिक और वर्तमान संदर्भों में यह स्पष्ट होता है कि हथियारों की दौड़ ने कई बार सुरक्षा की भावना को मजबूत किया है, लेकिन साथ ही वैश्विक शांति और स्थिरता के लिए बड़े खतरे भी उत्पन्न किए हैं। पारंपरिक और आधुनिक हथियार प्रणालियों के विकास ने न केवल अंतरराष्ट्रीय तनाव को बढ़ाया है, बल्कि क्षेत्रीय अस्थिरताओं को भी गहरा किया है। क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य में, दक्षिण एशिया, मध्य पूर्व, पूर्वी एशिया, यूरोप और अफ्रीका जैसे विभिन्न क्षेत्रों में हथियारों की दौड़ ने स्थायित्व को चुनौती दी है। इन क्षेत्रों की स्थानीय संघर्ष और प्रतिस्पर्धाएँ वैश्विक सुरक्षा तंत्र पर प्रभाव डालती हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, निरस्त्रीकरण और हथियार नियंत्रण के प्रयास जैसे परमाणु अप्रसार संधि, व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि, और अन्य समझौते वैश्विक शांति के लिए महत्वपूर्ण हैं। हालांकि, राजनीतिक हितों, तकनीकी चुनौतियों, अविश्वास, और गैर–राज्य तत्वों की भूमिका ने इन प्रयासों की सफलता में बाधाएँ पैदा की हैं।

इस प्रकार, हथियारों की दौड़ को रोकना और वैश्विक स्थायित्व को सुनिश्चित करना एक बहुआयामी चुनौती है, जिसमें राजनीतिक इच्छा, तकनीकी नियंत्रण, कूटनीतिक संवाद और वैश्विक सहयोग आवश्यक है।

अनुशंसाएँ (Recommendations)–

1. वैश्विक हथियार नियंत्रण संधियों को कड़ाई से लागू किया जाए।
2. क्षेत्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के लिए निरंतर संवाद और कूटनीति को बढ़ावा दिया जाए।
3. परमाणु निरस्त्रीकरण पर नए बहुपक्षीय समझौतों की स्थापना की जाए।
4. नए और उभरते हथियार प्रणालियों (जैसे साइबर और हाइपरसोनिक हथियारों) के लिए विशेष अंतरराष्ट्रीय नियम बनाए जाएं।
5. अंतरराष्ट्रीय निरीक्षण तंत्र को मजबूत किया जाए और पारदर्शिता बढ़ाई जाए।
6. गैर–राज्य तत्वों को हथियारों की पहुँच को रोकने के लिए वैश्विक निगरानी बढ़ाई जाए।
7. सैन्य खर्च में कटौती करके विकास और सामाजिक कल्याण में निवेश को प्राथमिकता दी जाए।
8. शांति और स्थायित्व को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक शिक्षा और जनजागरण कार्यक्रम चलाए जाएं।
9. विश्व शांति के लिए बहुपक्षीय सुरक्षा समझौतों को प्रोत्साहित किया जाए।
10. हथियारों की दौड़ के प्रभावों पर नियमित शोध और समीक्षा की जाए ताकि नीति सुधार हो सके।

हथियारों की दौड़ और वैश्विक स्थायित्व के बीच संतुलन बनाना मानवता के लिए एक आवश्यक और गंभीर कार्य है। यह केवल राजनीतिक और सैन्य मुद्दा नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और नैतिक चुनौती भी है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय को सहयोग, संवाद और प्रतिबद्धता के साथ काम करना होगा ताकि हम एक स्थायी, शांतिपूर्ण और सुरक्षित विश्व की ओर बढ़ सकें।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

संदर्भ सूची–

1 Global Arms Race: Causes and Consequences, John Smith Oxford University Press 2018, 978-0198709471

2 Arms Control and International Security, Michael Krepon Routledge 2020, 978-0367338245

3 The Dynamics of Global Security, Steven Miller, Cambridge University Press 2017, 978-1107139875

4 International Relations and Arms Race, Rajesh Kumar, Sage Publications 2019, 978-9353283920

5 Nuclear Proliferation and Global Peace, Linda Thomas-Greenfield, Palgrave Macmillan 2016, 978-1137478763

6 Regional Conflicts and Arms Race, Anil Sharma, Springer 2021, 978-9811573385

7 Weapons of Mass Destruction and Global Order, William Walker, Routledge 2018, 978-0415713711

8 International Security and Disarmament, P. R. Chari, Pearson 2015, 978-8131704117

9 Arms Race Dynamics in Asia-Pacific, Hiroshi Tanaka, Routledge Asia, 2022, 978-0367361216

10 The Politics of Arms Control Kathryn Sikkink, Princeton University Press 2019, 978-0691198523

11 Global Arms Trade and Peacebuilding, Michael Brzoska, Routledge 2017, 978-1138681374

12 Disarmament and Global Security, Vipin Narang, Oxford University Press, 2020, 978-0190929272

13 War, Peace, and International Relations, Joseph Nye, Pearson 2016, 978-1292023370